ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

VOLUME - VII ISSUE - I JANUARY - MARCH - 2018 AURANGABAD

Peer Reviewed Referred and UGC Listed Journal

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2017 – 5.2
www.sjifactor.com

✦ EDITOR ✦

Assit. Prof. Vinay Shankarrao Hatole

M.Sc (Math's), M.B.A. (Mkt), M.B.A (H.R),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod & Dirt), M.Ed.

✦ PUBLISHED BY ✦

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

EDITORIAL BOARD

Editor : Vinay Shankarrao Hatole

Dr. S. K. Omanwar Professor and Head, Physics, Sat Gadge Baba Amravati University, Amravati.	**Dr. Rana Pratap Singh** Professor & Dean, School for Enviromental Sciences, Dr. Babasaheb Bhimrao Ambedkar University Raebareily Road, Lucknow.
Dr. Shekhar Gungurwar Hindi Dept. Vasantrao Naik Mahavidyalaya Vasarni, Nanded.	**Dr. P. A. Koli** Professor & Head (Retd.), Department of Economics, Shivaji University, Kolhapur.
Dr. S. Karunanidhi Professor & Head, Dept. of Psychology, University of Madras.	**Prof. Joyanta Borbora** Head Dept. of Sociology, University, Dibrugarh.
Dr. Walmik Sarwade HOD Dept. of Commerce Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad.	**Dr. Manoj Dixit** Professor and Head, Department of Public Administration Director, Institute of Tourism Studies, Lucknow University, Lucknow.
Prof. P. T. Srinivasan Professor and Head, Dept. of Management Studies, University of Madras, Chennai.	**Dr. Shankar Ambhore** HOD Economics, Smt. Dankuwar Mahila Mahavidyalaya, Jalna.
Dr. P. Vitthal School of Language and Literature Marathi Dept. Swami Ramanand Teerth Marathwada University, Nanded.	**Dr. Jagdish R. Baheti** H.O.D. S. N. J. B. College of Pharmacy, Meminagar, A/P. Tal Chandwad, Dist. Nashik.
Dr. Sadique Razaque Univ. Department of Psychology, Vinoba Bhave University, Hazaribagh, Jharkhand.	**Prof. Ram Nandan Singh** Dept. of Buddhist Studies University of Jammu.
Dr. Gajanan Gulhare Asst. Professor Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati, Amravati.	**Dr. Madhukar Kisanrao Tajne** Department of Psychology, Deogiri College, Aurangabad.

✦ PUBLISHED BY ✦

Ajanta Prakashan

Jaisingpura, Near University Gate, Aurangabad. (M.S.) 431 004 (INDIA) Contact : (0240) 6969427, Cell : 9579260877, 9822620877 E-mail : anandcafe@rediffmail.com, info@ajantaprakashan.com, Website :www.ajantaprakashan.com

CONTENTS

Sr. No.	Author Name	Title	Page No.
		MARATHI	
१	**डॉ. श्री. प्रा. पी. यु. नेरपगार** **श्री. कांतीलाल दाजभाऊ सोनवणे**	नवे आर्थिक धोरण आणि समाजवाद	१-३
२	**प्रा. कांचन इंगोले**	वर्धा जिल्ह्यातील महिलांचे स्वयंसहाय्यता बचत गटामुळे होणाऱ्या सक्षमीकरणाचे अध्ययन	४-६
३	**डॉ. सुनंदा एकनाथराव आहेर**	मोलमजुरी करणाऱ्या महिलांसमोरील समस्या: एक चिकित्सक अभ्यास (संदर्भ बीड शहर)	७-१२
४	**डॉ. अभिजीत वेरुळकर**	आधुनिक काळातील स्त्रियांच्या सामाजिक समस्या	१३-१५
५	**प्रा. डॉ. आसाराम पवार**	जी. एस. टी. चा शेती क्षेत्रावर होणारा परिणाम	१६-१८
६	**श्रीमती शितल नागनाथ कांबळे**	द. वा. पोतदार व्यक्तित्व आणि विचार	१९-२१
७	**नम्रता राधाकृष्ण कुलकर्णी** **डॉ. चिंचोलीकर के.एल.**	औरंगाबाद शहरातील मराठी माध्यमाच्या इ. ५ वी च्या विद्यार्थ्यांचा इंग्रजी श्रवण व भाषण कौशल्य संपादणुकीचा शोध	२२-२४
८	**डॉ. अनिल दत्तराम बनकर**	हवा व जल प्रदूषण एक जागतिक समस्या, कारणे व उपाययोजना	२५-२७
९	**श्री. शिवाजी हरी चौगुले**	सोलापूरचे ग्रामदैवत श्री सिद्धरामेश्वराची गड्डा यात्रा	२८-३०
१०	**प्रा. डॉ. उज्वला मंत्री**	जीएसटी (GST) - नियम व अटी	३१-३४

११	**डॉ. श्रीमती सुभेदार बी. पी.** **राऊत सतिश रमेशपंत**	औरंगाबाद शहरातील जिल्हा परीषद व अनुदानित माध्यमिक शाळेतील पुरुष व स्त्री शिक्षकांच्या अध्यापन सक्षमतेचा तुलनात्मक अभ्यास	३५-४१
१२	**गायकवाड राम शाहू**	मराठवाड्यातील प्रधानमंत्री पीक विमा योजनेचे मुल्यमापन	४२-४५
१३	**संजय बंडूजी साठे**	भारतीय स्त्रियांचे आधुनिक काळातील शैक्षणिक योगदान	४६-४९
१४	**सीमा बबन भिसे**	वारकरी 'संप्रदाय उदय व विकास'	५०-५६
१५	**किरण बादशाहा बोरकर** **प्रा.डॉ.डी.ए. मानेराव**	आदिवासी स्त्री आणि जीवन	५७-६१
१६	**फड धनराज प्रभू**	उद्योजकता आणि मानवी विकास	६२-६६
१७	**पुनमचंद केशव सलामपुरे**	शिवसेनेची राजकीय वाटचाल व जनसंपर्काचे महत्त्व	६७-६९
१८	**संतोष शिवाजी साबळे**	प्रसार माध्यमातील महिलांचा सहभाग	७०-७८
१९	**विजय देविदासराव रजाने**	भटक्या विमुक्तांच्या अस्थीर जीवनपध्दतीचा अभ्यास	७९-८२
२०	**अविनाश सुदाम भालेराव**	मराठी दलित नाट्य चळवळ	८३-८५
२१	**सारिका विष्णूदास मोहिते**	शबरी कादंबरीतील विवाहित स्त्री शबरीचे व्यक्तीचित्रण	८६-८८
२२	**प्रा. डॉ. फड कालिदास दिनकर**	आपत्ती व्यवस्थापन काळाची गरज	८९-९२

२३	**डॉ. बाळासाहेब बाबुराव लिहिणार**	व्यंकटेश मांडगूळकर यांच्या कथेची वैशिष्ट्ये	९३-९५
		HINDI	
१	**डॉ. आर. जी. बम्बोले**	विनोबाजी का ब्रम्हचर्य एक अध्ययन	१-४
२	**दुर्गा प्रसाद सिंह**	मार्कंडेय की कहानियों में भूमि-समस्या	५-८
३	**डॉ. विजयप्रसाद के. अवस्थी**	भारतीय शिक्षा प्रणाली: कल आज और कल	९-१४
४	**इंदिरा रजेसिंग गिरासे** **डॉ. कुमार भुजंगराव कदम**	वीर शिरोमणी, अगम्य साहस और शौर्य का प्रतिक, स्थापत्यकला का जनक – महाराणा कुंभा	१५-१६
५	**डॉ. वन्दना चौबे** **अमित गंगानी**	गंगानी परिवार के आधर स्तंभ – पं. कुन्दनलाल गंगानी	१७-१९
६	**प्रा. अरूण वामन आहेर**	विष्णु प्रभाकर (अर्द्धनारीश्वर के विशेष संदर्भ में)	२०-२२
७	**वैजनाथ मेघराज राठोड**	बंजारन वेशभूषा	२३-२५
८	**डॉ. लक्ष्मी गुप्ता**	समकालीन महिला साहित्यकार निर्मला चौहान (इक्कीसवी सदी की महिला साहित्यकार)	२६-२८
९	**प्रा. डॉ. गुरुदत्त जी. राजपूत**	संत तुकडोजी की सामाजिक चेतना	२९-३२
१०	**प्रा. कृष्णा गायकवाड**	सुरजपाल चौहान कृत – 'तिरस्कृत' में दलित जीवन और समस्याएँ	३३-४०
११	**डॉ. अश्विनीकुमार नामदेवराव चिंचोलीकर**	रूपनारायण सोनकर के साहित्य में अभिव्यक्त दलित चेतना	४१-४४
१२	**प्रा. डॉ. विठ्ठल तुळशीरामजी वजीर**	प्रबंधात्मक काव्य 'असाध्यवीणा' में व्यक्त अज्ञेयजी	४५-४८

१३	**डॉ. चंद्रमादेवी पाटील**	प्रबोधन परक ऐतिहासिक नाटक – 'रक्तकल्याण'	४९-५३
१४	**डॉ. संगीता आहेर**	जनभाषा के कवि नागार्जुन	५४-५७
१५	**डॉ. पठाण ए. एम.**	हिंदी साहित्य की चर्चित कहानियों का सामाजिक संबंध	५८-६१

'अजिंठा' या त्रैमासिकात प्रसिध्द झालेली मते मुख्य संपादक, संपादक मंडळ व सल्लागार मंडळास मान्य असतीलच असे नाही. या नियतकालिकात प्रसिध्द करण्यात आलेली लेखकाची मते ही त्याची वैयक्तिक मते आहेत.

तसेच शोधनिबंधाची जबाबदारी स्वत: लेखकावर राहील. हे नियतकालिक मालक मुद्रक प्रकाशक विनय शंकरराव हातोले यांनी अजिंठा कॉम्प्युटर अॅण्ड प्रिंटर्स जयसिंगपूरा विद्यापीठ गेट औरंगाबाद येथे मुद्रित व प्रकाशित केले.

१५ हिंदी साहित्य की चर्चित कहानियों का सामाजिक संबंध

डॉ. पठाण ए. एम.
हिंदी विभाग, सहयोगी प्राध्यापक एवं शोधमार्गदर्शक, मिल्लिया कला, विज्ञान व व्यवस्थापन शास्त्र महाविद्यालय, बीड.

साहित्यकार समाज का एक महत्त्वपूर्ण अंग होने के नाते समाज के आचार-विचारों का पालन ही नहीं करता, बल्कि उसे विभिन्न समस्याओं का सामना भी करना पडता है। एक सामजिक प्राणी होने के नाते भी सामन्य जन की तुलना में वह अधिक भावुक एवं संवेदनशील होता है। वह समाज के सुख-दुख को विहंगम दृष्टि से देखकर लेखनीबद्ध करता है, जिससे उसका लेखन समाजगत हो जाता है। क्योंकि हर कोई रचनाकार अपनी लेखनी की आधार भूमि समाज से ही लेता है, और समाज को ही अर्पित भी करता है।

भारत कृषि-प्रधान देश है, किंतु आज के युग में जमींदार अपनी जमींदारी से विलग हो रहे हैं, कारण यह है कि एकल परिवार का रिवाज तीव्र गति से बढ़ रहा है। कृषक जमीन मकानों के लिए बेच रहे हैं। जिससे भारत वर्ष में उपजाऊ भूमि लुप्त हो रही है। इस बदलते सामाजिक स्वरूप एवं बदलती जीवन-शैली को जम्मू की प्रसिद्ध डोंगरी लेखिका पद्मा सचदेव ने अपने कथा साहित्य में यथासंभव स्थान दिया है। 'पेंशन' कहानी के आरंभ में इस दुख को व्यक्त करते हुए वह कहती हैं - "ज़मींदारी खत्म हुए बरसों हो गए हैं, पर ऊंची हवेली का हाथी दरवाजा भव्यता का प्रतीक नहीं, विपन्नता की निशानी है।"[१]

सदियों से चली आ रही सामाजिक समस्या 'दहेज प्रथा' समाज के लिए ऐसा अभिशाप है, जिस पर समाज का एक एक प्राणी अपनी नाराज़गी ही व्यक्त नहीं करता बल्कि इसके प्रति विद्रोह भी करना चाहता है किंतु दहेज देने वाले भी 'हम ही' और लेने वाले भी 'हम ही' हैं कारण यह है कि इस घोर समस्या का समाधान न बड़े बड़े समाज सुधारक कर पाए और न ही कोई नियम - अधिनियम इसको रोक सका, क्योंकि समाज का एक-एक अंश इसको किसी न किसी रूप में स्वीकारता है। यह समस्या बढ़ती ही जा रही है, समाप्त होने का नाम ही नहीं लेती है, "क्योंकि परिस्थितियाँ कहीं कहीं पर कन्यापक्ष को दहेज देने के लिए विवश भी करती हैं या स्वयं ही दहेज देने के इच्छुक होते हैं, क्योंकि लडकी की शारीरिक अपूर्णता 'छोटा-सा कद, काला और पीठ पर बड़ा सा कूबड़'।"[२]

बेटी की अपूर्णता माँ-बाप के लिए गहरा घाव होती है, जिसको वह दहेज़ देकर पूर्ण करते है और दोषमुक्त होकर समाज में अपनी प्रतिष्ठा बरकरार रखते है- पिता ने उसका हाथ उनके हाथ में देकर कन्यादान कर दिया था भार हल्का हो गया था। विदाई के वक्त हाथी दरवाजे से उसकी पालकी उठाए जब कहार निकले थे तो ससुर ने पहले मुट्ठी मोहरों की भरकर डोली पर से न्योछावर की थी। दूसरी मुट्ठी उसके पिता ने पकड़ ली थी। फिर दुअन्नियाँ रूपयों की बौछार के मार बार बार पालकी रूकती थी।

बाँझपन पर किसी भी सांसारिक प्राणी का अधिकार नाहीं। बाँझ महिला भी हो सकती है और पुरूष भी, यह कुदरत का दिया हुआ शाप है। शारीरिक अपूर्णता भी ऐसी सामाजिक समस्या बन गई है जिससे पूरा समाज परेशन है, क्योंकि इस समस्या से आए-दिन कई दंपत्ती विलग होते रहते हैं। कई आत्महत्या कर लेते है। शिक्षित वर्ग की बुद्धि भी इस समस्या को लेकर भ्रष्ट हो गई। समाज में उनको घृणा की दृष्टि से देखा जाता है और तहर-तरह के उलाहने देकर नारी का जीवन सूना बना देते हैं। इस विवाह को सहते सहते वह पागलों की भाँति स्वप्नों को भी साकार मानने लगती है। अमृता प्रीतम की कहानी 'सिर्फ औरत' से उदाहरण द्रष्टव्य है- "स्वप्न में मैं पौधो में पानी दे रही होती थी और एक बच्चे का चेहरा, बाँझ सिर्फ औरत, एक माँ सिर्फ औरत, सुहागन सिर्फ औरत, केवल एक साहित्यकार ही उसकी जगह रिक्त कर देता है।"[३] उपर्युक्त समस्या एकल परिवार की अपेक्षा संयुक्त परिवार की बाँझ औरत को न के बराबर प्रभावित करती है, क्योंकि साँझे में उसको अपने- पराए का बोध ही नहीं रहता है। किसी करीबी रिश्ते के बच्चे के मुँह से छोटी माँ, बड़ी माँ संबोधन सुनकर कभी अपना जीवन सूना, वीरान एवं अकेला महसूस नही होता है- "कम्मों का विचार था कि गोद लेने से एक की, न लेने से सबकी मैं बड़ी माँ हूँ।.."[४] उसके पति भी तो उससे बच्चे की तरह ही लाड़ प्यार करते थे। बाँझ होना नारी-पुरूष के लिए कोई बड़ी समस्या नहीं है अगर दोनों इस बात को समझ लें कि दंपत्ती का रिश्ता.. एक ऐसा रिश्ता है, जिस को बाँझपन क्या कोई भी अलग नहीं कर सकता, पर दोनों अगर उँची सोच वाले हों। मन्नू भंडारी ने अपनी कहानी 'उँचाई' में यही माना है कि जिस 'उँचाई' पर पत्नी होती है, उस 'उँचाई' को प्रेमिका भी छू नहीं सकती है।

आधुनिक सुविधाओं के प्रसार से आजकल युवक-युवतियाँ बहुत जिद्दी हो रहे हैं। उनको बड़ो से जरा भी भय नहीं लगता और न ही माँ बाप अपने पुत्र-पुत्रियों को इस प्रकार के संस्कार देना अपना कर्तव्य समझते हैं। "सब लड़कियो की नाक बिंधी पर छूटना के सामने किसी की न चली। उसे नहीं बिंधवानी थी, उसने नही बिंधवाई। रमा चुप रह गई, कुछ न बोल पाई।"[५]

"सदियों से होते आए शोषण और दमन के प्रति 'स्त्री-चेतना' ने ही स्त्री- विमर्श को जन्म दिया है। 'स्त्री-विमर्श और कुछ नहीं आत्मचेतना, आत्मसम्मान, आत्मगौरव, समता और सम्मानाधिकार की पहल का दूसरा नाम है।"[६]

इक्कीसवीं सदी को नारी सशक्तिकरण का युग कहा जाता है। नारी को अबला नहीं, अब सबला कहा जाता है। परंपरागत मान्यताएँ एवं रूढ़ियाँ, पुरूष समाज में होने वाले अन्यायों और अत्याचार आदि के विरूद्ध आज भी नारी कदम उठाने का साहस नहीं करती। मारवाड़ी परिवारों में वही परंपरा अभी भी बनी है, जो आज से सदियों पुरानी व्यवस्था थी- 'मर्दो' के बाद बड़ी माँ व बड़ी बहुएँ खाना खाती हैं, फिर छोटियों की बारी आती है। जब पटेर पर बैठती हैं, तब भी अपनी-अपनी पदवी के अनुसार। हर छोटी-बड़ी बातों के लिए पैर छूने व पैरों पड़ने का चयन तो है ही, चूडियाँ पहनीं तो सास दादास के पैर छूना, मेहँदी लगाई या और कोई ऐसी बात तो बड़ो का आशीर्वाद लेना अनिवार्य था।

नारी सशक्तिकरण से ही नारी में आत्मशक्ति उत्पन्न हुई है 'मधु अब भी सोच रही है' कहानी में लेखिका आशारानी ब्होरा ने राज नायक के द्वारा समाज के सामने इस बात को प्रस्तुत किया है कि इक्कीसवीं सदी के पढ़े लिखे स्त्री पुरूष को इस बात की पूरी स्वतंत्रता मिली है कि वह निजी विचार रखे और उन्हें अमल में लाने के लिए भरपूर प्रयास करे चाहे उसको

पति के जिंदगी से हाथ ही क्यों न धोना पड़े वह प्रेमी के स्वप्नों में ही खोयी रहती है- "राज की प्रतिक्षा करते हुए। चाय बनाते हुए। न जाने क्या सोचती जा रही है। रिश्ते ऐसे मूल्यहीन हो रहे है कि पति-पत्नी प्रत्यक्ष होकर भी परोक्ष होते है। क्योंकि मन की दरारों से ही सतत अंतर्द्वंद्व में जी रहे है, बहिरूप से पुष्ट दिखने वाले कुछ पुरूष का अंतर्मन भी दुःख, दर्द या संत्रास का शिकार होता है। चाहे वह पिता, पति, भाई या पुत्र के रूप में हो, कोई पुरूष प्रेमिका की मार से पीड़ित है, कोई आर्थिक विषमता के कारण, कोई अपनी पत्नी से पीड़ित है। 'काश' राज ने अपने पर जोर डाल डालकर अपना दिल 'बडा' करने का प्रयत्न न किया होता। पर अब इस अंतिम समय में वह उसे दिल छोटा करने के लिए भी कैसे कहे। हार्ट एनलार्जमेंट फिर 'सिरियस हार्ट एनलार्जमेंट...' फिर सीरियस हार्ट एनलार्जमेंट' ओफ्फ। कभी इस बीमारी का नाम सुना था पहले।"[७]

पुरानी कहानियों में अधिकांशतः नारी का चरित्रांकन पुरूष की दमित आकांक्षाओ से प्रेरित होकर किया गया है, जिस में नारी के सच्चे स्वरूप एवं यथार्थता को ध्यान में कम ही रखा जाता था, किंतु आज कहानी में नारी का चित्रण यथार्थ रूप में किया जाता है। स्वतंत्र व्यक्तित्व तथा दंपत्ती के आपसी संबंधों के बीच द्वंद्व का सफल चित्रांकन होता है।

भारतीय समाज में परंपरागत मूल्यों का विघटन हो रहा है किंतु मारवाड़ी परिवारों में कहीं कहीं पर अभी भी वह मूल्य सुरक्षित है, जिस को डॉ. सिंधु भिंगारकर ने अपनी कहानी में सफलतापूर्वक दिखाया है। पद्मा सचदेव तो अतीत के सहारे ही वर्तमान जी लेती हैं। ज़मीदारी, तभी से औरतों का सुबह उठके मटके में पानी लाना, चूल्हा जलाना आदि परंपराओं को याद करते हुए वह अपने 'कथा साहित्य' का ढाँचा तैयार करती हैं। किसी भी क्षेत्र की लेखिका या लेखक क्यों न हो 'दर्द एक ही समाज की विभिन्न शाखाएँ हैं। विषय अलग-अलग होने के बावजूद कहीं कहीं एक जैसे ही लगते हैं, क्योंकि चाहे व सामाजिक समस्या हो या आर्थिक, धार्मिक हो या राजनीतिक, नारी पीड़ा हो या नवीन मूल्यों का पर्दाफाश आदि केवल भारतीय समाज की समस्या न होकर पूरे विश्व की है।

शिल्प की दृष्टि से यह कहानियाँ नवीनता लिए हुए हैं और नए प्रयोग भी किए हैं छोटे बड़े संवादो से अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त किया है। कहीं-कहीं इनकी आंचलिकता भी प्रकट होती हैं-' यह झगड़ा "थारे घर का है... अपनी लाड़ली ने सँभालो, समझाओ या फिर डॉक्टर ने यहाँ से हटाओ। अगर कुछ न कर पाओ तो कर दो छोरी के हाथ पीले' मारवाड़ी भाषा।

अतः नई कहानी की भाषा एवं शिल्प में जो परिवर्तन आए हैं, उनका प्रभाव इन कहानी लेखिकाओं में भी परिलक्षित हुआ है, इनकी कहानियों में अपने ग्रामीण अंचल की भाषा की सुगंध और आम जीवन का सस्पर्श है। इन्होंने कथ्य के अनुरूप ही शिल्प का भी प्रयोग किया है।

वास्तव में साहित्य समाज का प्रतिबिंब होता है। भारतीय समाज ने परिवर्तन के जितने सोपान पार किए, उस हर सोपान पर उपयुक्त समस्याएँ विद्यमान रहीं। चाहे वह किसी भी रूप में क्यो न हों। सभ्यता के विकास में दिन प्रतिदिन मान्यताएँ बदलती जाती हैं, किंतु आज वे कोई दूसरा रूप लेकर हमारे सामने कहीं विद्यमान हैं, क्योंकि भारतीय समाज-व्यवस्था और धर्म व्यवस्था सामजिक समस्याओं का पोषण करती आई है। यही कारण है कि कहीं-कहीं लेखिकाएँ सामाजिक मान्यताओं की जबरदस्त समर्थक भी दिखाई देती हैं।

कहानियों में कुछ कमी भी रही होगी, तो भी हमे मानना पडेंगा कि उपर्युक्त कहानियाँ अपने समय की चर्चित कहानियाँ रही हैं, भले ही समस्याओं का समाधान न दे पाएँ लेकिन समस्याओं के मूल स्त्रोत को उन्होंने ढूँड़कर पाठक के समक्ष रखा है, ताकि पाठक जो समाज का विशेष अंग है, इन समस्याओं को किसी हद तक रोक पाए और क्रांतिकारी रूप में समाज के सामने आए।

संदर्भ ग्रंथ

१. पद्मा सचदेव - पेंशन - पृ. २४

२. वही - पृ. २५.

३. अमृता प्रीतम - सिर्फ औरत - पृ. ३६.

४. प्रेम जैन - किस्मत का खेल - पृ. ३८.

५. डॉ. अर्जुन चव्हाण - विमर्श के विविध आयाम - पृ. २९.

६. आशारानी ब्होरा - मधु अब भी सोच रही है - पृ. ४७.